International Journal of Scientific Research in Science, Engineering and Technology (www.ijsrset.com)
© 2014 IJSRSET | Volume 1 | Issue 1 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

भारतीय संस्कृति एवं रामायण के हनुमान् का वैशिष्ट्य

नागेन्द्र उपाध्याय
शोध–छात्र, संस्कृत विभाग,
मगध विश्वविद्यालय, बोध गया, बिहार, भारत

शोध आलेख सार :- मानव जीवन में संस्कृति का अत्यधिक महत्त्व है। संस्कृति ही राष्ट्र की आत्मा होती है। विश्व पटल पर भारत की संस्कृति मानवता के उत्थान, उन्नति एवं कल्याणकारक रही है। भारतीय संस्कृति के उन्नायक वाल्मीकीय रामायण के हनुमान् महाकवि वाल्मीकि के जीवन–धन है। हनुमान् ने अपनी शक्ति–शौर्य से रावणवाद तथा राक्षसता से पूरे विश्व की रक्षा की है। हनुमान् भारतीय संस्कृति के महान् स्रोत , धर्म रक्षक एवं अद्‌भुत सेवा–धर्म के साधक है। इनका उदात्त व्यक्तित्त्व और आदर्श जीवन–दर्शन अनुकरणीय है।

मुख्य शब्द :– संस्कृति, उन्नायक, शक्ति–शौर्य , उदात्त व्यक्तित्त्व।

संस्कृति का महत्त्व- मानव–जीवन में संस्कृति का अत्यधिक महत्त्व रहा है। मानवीय प्रगतिशीलता एवं राष्ट्रिय आदर्श की मर्यादा एवं स्वतन्त्रता की पावन प्रतिष्ठा का नाम संस्कृति है। वस्तुत: संस्कृति किसी भी राष्ट्र की आत्मा होती है और वही राष्ट्र की जीवनी– सञ्जीवनी भी होती है। संस्कृति के सहारे ही कोई भी राष्ट्र जीवित रह पाता है। जो राष्ट्र अपनी संस्कृति को त्याग देता है। वह जीवित नहीं रह सकता, क्योंकि राष्ट्र की ऊर्जा संस्कृति ही होती है। संस्कृति ही किसी राष्ट्र के निवासियों के चरित्र को उदात्त बनाती है। भारत की संस्कृति एवं नैतिकता निर्माण की संस्कृति है। अस्तु, यदि भारत अपनी संस्कृति को छोड़ देगा तो उसका चारित्रिक एवं नैतिक महापतन हो जाना निश्चित है।

संस्कृति मानव का खोज है। वह जीवन का उदात्त आदर्श है। यदि उसका समादर उत्थान कराता है तो निरादर पतन के गर्त में गिरा देता है। वस्तुत: विशुद्ध संस्कार से ही आदर्श संस्कृति बनती है। 'सम्'

उपसर्ग पूर्वक 'कृ' धातु से भूषण अर्थ में सुट् आगम पूर्वक भाव अर्थ में 'क्तिन्' प्रत्यय करने पर 'संस्कृति' शब्द बनता है, जिसका अर्थ होता है परम्परागत अनुस्यूत संस्कार।

भारतीय संस्कृति–

भारत की संस्कृति अत्यन्त पावन रही है। इसका लक्ष्य मानवता का उत्थान, उन्नति एवं कल्याण रहा है। सबकी उन्नति, सबका कल्याण ही भारतीय संस्कृति का लक्ष्य एवं आदर्श रहा है–

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।[1]

भारतीय संस्कृति संसार के सभी प्राणियों, सभी जीवों को अपनी आत्मा के समान मानते हुए सभी जीवों के प्रति करूणा, प्रेम, क्षमा, दया, सहिष्णुता के साथ–साथ निर्लिप्त भाव से सभी कार्यों का सम्पादन करना ही मानवता का लक्ष्य है। भारतीय संस्कृति की स्पष्ट उद्घोषणा है–

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।

उदारचरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

मातृवत् परदारेषु पर द्रव्येषु लोष्ठवत्।

आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पण्डितः।। [2]

धर्म का स्थान–

भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत धर्म का स्थान अति महत्त्वपूर्ण है। धर्म रूपी वृक्ष का उत्पादन संस्कृति की उर्वरक भूमि में ही हो सकता है। वृक्ष, फूल, फल, पत्ते, शाखा आदि कई अंगों से युक्त होता है, उसी तरह धर्म रूपी वृक्ष के अंग के समान सभी सम्प्रदाय हैं। धर्म सार्वभौम एवं सार्वजनिक साधन के रूप में है, तो सम्प्रदाय व्यक्तिगत साधन स्वरूप है। धर्म शाश्वत, सार्वजनिक एवं सार्वकालिक होता है तो सम्प्रदाय एकदेशीय, सामयिक एवं व्यक्तिवादी होता है। वस्तुतः संस्कृति समन्वित मानवतावादी सिद्धान्त से युक्त सनातन धर्म (हिन्दुत्त्व) है। सनातन धर्म ही विश्व का आदर्शतम धर्म है। सनातन धर्म का फूल भारतीय संस्कृति की भूमि पर ही उगता है। वस्तुतः भारतीय संस्कृति की सुगन्धी के प्रभाव से सुवासित सनातन धर्म मानव को ह्रास से विकास की ओर, व्यष्टि से समष्टि की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर तथा विनाश से उत्थान की ओर बरबस ही पहुँचा देता है–

उतिष्ठत् जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत'

असतो मा सद्गमय,

तमसो मा ज्योतिर्गमय,

मृत्योर्मा अमृतं गमय।[3]

हनुमान् का वाल्मीकीय रामायण में स्थान-

भारतीय संस्कृति के प्राणस्वरूप हनुमान् महाकवि वाल्मीकि के जीवन धन हैं। हनुमान् अपनी शक्ति-शौर्य के सहारे ही रावण की भारतीय विरोधी नीति के समक्ष अवरोध पैदा करते हैं। वाल्मीकि के हनुमान् ही वह शक्ति हैं, जो रावण के रावणवाद से, उसकी राक्षसता से पूरे विश्व की सुरक्षा कर सके हैं। डा॰ श्रीनिवास तिवारी ने कहा है-" सीता माता का अन्वेषण के साथ-साथ लंका दहन, श्रीराम-रावण युद्ध में अपरिमित साहस एवं शक्ति का परिचय दे, भारतीय संस्कृति के प्रबल संरक्षक के साथ-साथ अपने दायित्वों के पालन एवं चारूमय चरित्र का प्रदर्शन कर सौम्य संस्कृति के सलिल संरक्षक के रूप में दीख पड़ते हैं।"[4]

धर्म की धूरी हनुमान्-

धर्म और अध्यात्म में साम्य है। धर्म अर्थात् अध्यात्म के द्वारा ही देशवासियों को आदर्श नागरिक बनाया जा सकता है और आदर्श नागरिक ही राष्ट्र को आदर्श बना सकते हैं। संस्कृति का निर्माण भी धर्म से ही होता है। धर्म समन्वित उदात्त संस्कृति ही राष्ट्रवासियों के व्यक्तित्त्व का सर्जन करती है। 'धृ' धारणे धातु से निर्मित धर्म शब्द धारण, पोषण, अवस्थान आदि दश अर्थों में होता है। धर्म की परिभाषा के क्रम में कहा गया है-

"पतितं पतन्तं पतिष्यन्तं धरतीति धर्म:"[5]

अर्थात् जो गिरे हुए, गिरते हुए और गिरने वाले मनुष्यों को अवनति-मार्ग से हटाकर उन्नति की ओर ले जाने की शक्ति धारण करता है, वही धर्म कहलाता है, यानि जो समाज अथवा राष्ट्र को धारण करे वह धर्म है।"[6]

रामायण महाकाव्य में हनुमान् आदर्श धर्म-निर्माण के आधार स्तम्भ के रूप में दीख पड़ते हैं। वे व्यक्ति, समाज के साथ-साथ पूरी सृष्टि एवं परमेष्टि में सामंजस्य बैठा देनेवाले दिव्यतम धर्म की धूरी है।

हनुमान् भारत राष्ट्र के समस्त जीवन में संचार करने वाले आदर्शतम धर्म के धवल ध्वज हैं। वे भारतीय वैयक्तिक एवं राष्ट्रिय जीवन की रीढ़ हैं।"[7]

भारतीय संस्कृति के महान् स्रोत हनुमान्-

हनुमान् भारतीय संस्कृति के संस्थापक स्रोत हैं। सेवा–धर्म संस्कृति निर्माण का सहायक अंग है। भारतीय संस्कृति में सेवा–धर्म की महत्ता अत्यधिक है। हनुमान् के जीवन की एकमात्र लालसा एवं आदर्श भारत राष्ट्र एवं राष्ट्राध्यक्ष श्रीराम की सम्पादनता है–

बड़भागी अंगद हनुमाना।

चरण कमल चापत विधि नाना।[8]

सेवक–शिरोमणि हनुमान् की सेवा पराकाष्ठा तक पहुँची हुई दर्शित होती है। उनकी सेवा ने श्रीराम के साथ–साथ राष्ट्र को भी शक्ति–समन्वित बनाया है।

त्याग भी भारतीय संस्कृति का मुख्य स्वरूप है। त्याग के सहारे ही भारतीय ऋषियों ने भारतीय संस्कृति को उदात्त बनाया है। त्याग की पावन प्रतिमूर्ति हनुमान् का सम्पूर्ण जीवन ही त्याग–दर्शन सदृश है। श्रीराम एवं भारतीय राष्ट्र के लिए उन्होंने अपने जीवन को ही समर्पित कर दिया है–

यत्र-यत्र रघुनाथकीर्तनं, तत्र-तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम्।

वाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारूतिं नमत राक्षसान्तकम्।।[9]

स्पष्ट प्रमाण है कि भक्ति–शास्त्र के प्रधानाचार्य आञ्जनेय को जब भी अवकाश मिल जाता तब वे निकटवर्ती शैल के शिखरों पर जाकर अपने परम प्रभु का स्मरण ध्यान करते हुए उनका चरित्र भी स्वान्तः सुखाय शिलाओं को स्लेट बनाकर लिखते भी जाते हैं। लेकिन ब्रह्मर्षि वाल्मीकि की यह चिन्ता देखकर कि हनुमान् द्वारा लिखित रामायण के समक्ष मेरी रामायण अप्रभावी एवं अलोकप्रिय हो जायेगी, स्वयं उन्होंने शिलाखण्डों पर अंकित स्वरचित रामायण को समुद्र में निमज्जित कर दिया। हनुमान् जैसे महाकवि का यह अद्वितीय त्याग विश्व–साहित्य में अकेला है।

सेवा-धर्म के अद्वितीय साधक हनुमान्-

भारतीय संस्कृति में सेवा–धर्म को अत्यन्त महान् स्थान प्राप्त है। मानव जीवन में सेवा–धर्म सबसे कठिन धर्म रहा है, लेकिन हनुमान् जी इसका अद्वितीय साधक रह चुके हैं। हनुमान् के जीवन का अति

उज्ज्वल यदि कोई पक्ष है तो वह है सेवा साधनता। सेवा सम्पादन ही उनके जीवन का एकमात्र उदात्त लक्ष्य रहा है–

बड़भागी अंगद हनुमाना।

चरण-कमल चापत विधि नाना।।[10]

सेवक शिरोमणि हनुमान् की सेवा पराकाष्ठा तक पहुँची हुई दीख पड़ती है। उनकी सेवा सुग्रीव के प्रति हो या स्वामी श्रीराम के प्रति, वह अति आदर्शमय एवं पावन रही है। उनकी सेवा की प्रशंसा करते हुए स्वयं श्रीराम कहते हैं–

एतस्य बाहुवीर्येण लंका सीता च लक्ष्मणः।

प्राप्तामया जयश्चैव राज्यं मित्राणि बान्धवाः।

हनुमान् यदि मे न स्यात् वानराधिपते सखा।

प्रवृत्तिमपि को वेतुं जानक्याः शक्तिमान् भवेत्।।[11]

ब्रह्मचर्य के साक्षात् स्वरूप श्री हनुमान्-

मानव–जीवन में ब्रह्मचर्य का अति महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। ब्रह्मचर्य के बल पर मानव सभी क्षेत्रों में सफलता प्राप्त कर सकता है। मानव की शक्ति इन्द्रियों के माध्यम से सुख में व्यय हो जाती है, जिससे वह उँचाई की ओर उठ नहीं सकता है। अस्तु, जीवन में ब्रह्मचर्य को उतार लेने में एकमात्र हनुमान् ही अबतक सफल हो सके हैं। वे अखण्ड ब्रह्मचर्य की पवित्रता के प्रतीक हैं। वे ब्रह्मचारियों में अग्रणी रहे हैं। वे अपूर्व नैष्ठिक ब्रह्मचारी हैं।

अञ्जनीगर्भसम्भूतो वायुपुत्रो महाबलः।

कुमारो ब्रह्मचारी च हनुमन्ताय नमो नमः।।[12]

संक्षेपतः अति उदात्त एवं अनुकरणीय व्यक्तित्त्व–सम्पन्न हनुमान् भारतीय संस्कृति के आधार स्तम्भ, महान् मेरूदण्ड एवं रामायण के प्राण हैं। ऐसे चरित्रवान्, निष्ठावान्, सदाचारी एवं सद्विचारी

इतिहास पुरूष सम्पूर्ण विश्व में अकेले हैं। इनके अनुशासित ब्रह्मचर्य से युक्त जीवन छात्रों के लिए आदर्श बन सके, इसके लिए राष्ट्रिय पाठयक्रमों में हनुमान् के आदर्शतम एवं उदात्ततम जीवन-दर्शन को पढ़ाया जाना चाहिए। उनके उदात्त व्यक्तित्व, आदर्श जीवन-दर्शन एवं महान् कर्तव्यों को पढ़कर राष्ट्र के भावी कर्णधार छात्रगण भी शील-समन्वित उदात्त चरित्रवान् के साथ-साथ विशिष्ट शक्तिमान् हो सकेंगे ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है-

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहम्

दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।

सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं

रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि।।[13]

सन्दर्भ ग्रंथः-

1. वा॰रा॰ में हनुमत् तत्त्व विवेचन-पृ॰-130
2. हितोपदेश,
3. वा॰ रा॰ में हनुमत् तत्त्व विवेचन-पृ॰-130
4. वा॰ रा॰ में हनुमत् तत्त्व विवेचन-पृ॰-132
5. कल्याण, धर्मांक
6. डॉ श्रीनिवास तिवारी, वा॰रा॰ में हनुमत् तत्त्व विवेचन-पृ॰-132
7. वा॰ रा॰, में हनुमत् तत्त्व विवेचन-पृ॰-132
8. रा॰ च॰ मा॰, ल॰ का॰ दा॰-10/4,
9. वा॰ रा॰ पाठ विधि पृ॰ 3,
10. रा॰ च॰ मा॰, ल॰ का॰ दो॰ 10/4
11. वा॰ रा॰, उ॰ का॰ सर्ग 35/9-10
12. वा॰रा॰ में हनुमत् तत्त्व विवेचन-पृ॰-133,
13. रा॰ च॰ मा॰